पीयर-रिव्यूड जर्नल
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org

अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 2026, पृष्ठ 19–26
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n3.2026.093

# भारत के प्रमुख नाथ मठों का ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

**नरेश कुमार [1] & डॉ० अश्वनी कुमार [2]**

प्राप्तिः 12 जून 2026 / संशोधित: 24 जुलाई 2026 स्वीकृतः 28 जुलाई 2026 / प्रकाशित ऑनलाइन: 31 जुलाई 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

**सारांश**

नाथ परंपरा भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक परंपरा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, जिसनें योग, साधना और गुरु शिष्य परंपरा एवं सामाजिक समरसता के माध्यम से भारतीय संस्कृति को गहराई से अपना प्रभाव डाला है। भारत में नाथ पंथ के मठ केवल धार्मिक आराधना का ही केंद्र नहीं है बल्कि वे शिक्षा, योग साधना, सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और लोकपरम्पराओं के विस्तार तथा सामाजिक सेवा के प्रमुख स्थान भी रहे हैं। मध्यकाल युग से वर्तमान समय तक नाथ मठों ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक चेतना के संवर्धन, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा सांस्कृतिक एकता के संरक्षण एवं सामाजिक समरसता को स्थायी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि नाथ मठ धार्मिक आस्था के केंद्र के साथ-साथ उन्होंने भारतीय संस्कृति के निरंतर विकास में भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन मठों के माध्यम से योग परंपरा, लोकहित की भावना, सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों को निरंतर प्रोत्साहन मिला है। समकालीन समय में भी नाथ मठ भारतीय आध्यात्मिक परंपरा, सांस्कृतिक विरासत तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार के प्रमुख केंद्र के रूप में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
**कुंजी शब्द**: नाथ पंथ, मठ, योग परंपरा, भारतीय संस्कृति, समरसता।

## प्रस्तावना

भारत की संस्कृति में नाथ मठों का विशिष्ट स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही मठ सिर्फ साधकों के रहने के स्थल नहीं रहे बल्कि वह शिक्षा, साधना, दर्शन, संस्कृति तथा समाज सेवा के मुख्य संस्थान के रूप में विकसित हुए। भारत में सभी धर्मों के लोगों ने अपने अपने संप्रदाय के मुताबिक अपने-अपने मठों की स्थापना की, जिनके माध्यम से लोगों ने आध्यात्मिक ज्ञान, सदाचारपूर्ण संस्कृति का संरक्षण और प्रसार किया। इन सब अलग-अलग मठों में ही नाथ संप्रदाय के मठों का एक अहम स्थान रहा है। आज भी नाथ मठ की परंपरा और उसकी झलक हमें भारत के हर कोने में देखने को मिलती है।

[1] शोध छात्र, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता केंद्र, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू
[2] तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता केंद्र, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू
✉ नरेश कुमार, E-mail: nareshbassay931@gmail.com

भारत में नाथ नाथ मठों की स्थापना का मूल लक्ष्य संन्यासियों के आवास की व्यवस्था करना नहीं था बल्कि वह योग साधना की उन्नति, आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार –प्रसार एवं समाज में नैतिक और मानवीय मूल्यों की स्थापना करना था। नाथ संप्रदाय के मठों ने समय समय पर योग, धार्मिक शिक्षा, जनकल्याण, भोजनदान, गोपालन सेवा और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से समाज को निरंतर दिशा प्रदान की। नाथ पंथ के मठ भारतीय धार्मिक संस्थाओं के साथ साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के भी महत्वपूर्ण केंद्र बन गए।

मध्ययुगीन भारत में जब सामाजिक एवं धार्मिक दशाएँ परिवर्तित होती हुई नजर आई तब नाथ मठों ने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं को सुरक्षित रखने की अहम भूमिका निभाई थी। इन मठों के द्वारा ही योग, हठयोग, तप, संयम तथा गुरु शिष्य परंपरा का बहुत व्यापक प्रचार प्रसार हुआ था और साथ ही नाथ पंथ के योगियों ने जातिगत भेदभाव, सामाजिक कुरीतियों, रूढ मान्यताएँ, दिखावा का विरोध करते हुए समानता, भाईचारा और लोककल्याण की भावना को भी प्रेरित किया था। इसके फलस्वरूप नाथ मठ केवल धार्मिक संस्थान न रह कर सामाजिक जागरण के प्रभावशाली केंद्र बन गए।

भारत के अलग अलग राज्यों में स्थित नाथ मठ अपनी अपनी एक अलग पहचान, ऐतिहासिक आधार भूमि, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के कारण अपना विशेष महत्व रखते हैं। जैसे उत्तर प्रदेश का गोरखनाथ मठ, हरियाणा का अस्थल बोहर मठ, जम्मू कश्मीर का बाबा सिधगोरिया नाथ मठ, बिरफानाथ मठ, परगोसिद्ध मठ, कर्नाटक का कदरी मठ, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड ,पंजाब, मध्य प्रदेश, असाम, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और यहाँ तक की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नाथ मठ हमें देखने को मिलते है जैसे कैलाश पर्वत मार्ग, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, रूस, स्पेन, यूक्रेन, फ्रांस और अन्य क्षत्रों में स्थित अनेक नाथ मठ आज भी अपनी प्राचीन परंपरा को जीवित रखे हुए है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य भारत के प्रमुख नाथ मठों की ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महत्व तथा सामाजिक योगदान का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करना है और यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है की भारत के अंदर और भारत के बाहर जो भी नाथ मठ है वह केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति, योग परंपरा, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह शोध पत्र भारत देश के अलग अलग राज्यों में स्थित प्रमुख नाथ मठों के ऐतिहासिक विकास और समकालीन प्रासंगिकता का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है ।

**साहित्य समीक्षा**

नाथ संप्रदाय और उसके मठों पर अलग अलग विद्वानों ने अलग अलग काल में उनकी ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किए है। नाथ संप्रदाय से संबंध रखने वाले साहित्य से हमें यह ज्ञात होता है की नाथ परंपरा भारतीय समाज में योग, आध्यात्मिक, साधना, गुरु-शिष्य परंपरा और सामाजिक समरसता के संरक्षण और संवर्धन की महत्वपूर्ण वाहक रही है।

George Weston Briggs ने अपनी एक पुस्तक (1) *Gorakhnath and the Kanphata yogis* के पाँचवे अध्याय और छठे अध्याय में नाथ संप्रदाय के प्रमुख तीर्थ स्थलों और मठों का पूर्ण रूप से विवरण प्रस्तुत किया है। लेखक ने गुरु गोरखनाथ से संबंधित नेपाल के काठमांडू, बागमती, कुमायूं, गढ़वाल की चर्चा की है। इस पुस्तक में उन्होंने गोरखपुर में कनफटा योगियों का भी महत्वपूर्ण स्थान बताया है। महंत डॉ. योगी विलासनाथ की पुस्तक (2) *'श्री नाथ संप्रदाय के तीर्थ स्थल एवं प्राचीन भतृहरि गुफा एवं महात्म्य'* नाथ संप्रदाय के मठों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें भारत के अलग अलग राज्य और अंतरराष्ट्रीय मठ जैसे नेपाल, पाकिस्तान, यूरोप, अमेरिका आदि देशों में स्थित मठों का संक्षिप्त इतिहास भी उजागर करती है। तीसरी पुस्तक (3)*'जाग गौरिया गोरख आया सिद्ध गोरिया की महिमा'* पुस्तक जम्मू शहर के डोगरी भाषा के लेखक ओम गोस्वामी द्वारा रचित है। इस पुस्तक में बाबा सिधगोरिया के मठ के बारे में चर्चा की गई है। मठ के परिसर में बाबा सिधगोरिया के साथ-साथ और भी बहुत सारे छोटे छोटे मंदिर है। जुल्फिकार अली कलहेरो (2015) ने (4)*The Temple of Veer Nath: Between Marhi and Math* शोध पत्र में पाकिस्तान में स्थित वीरनाथ मठ का धार्मिक और सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। शशांक

चतुर्वेदी (2017) के शोध पत्र (5) "*Khichdi mela in Gorakhnath Math: Symbols Ideas and Motivations"* में गोरखनाथ मठ के सांस्कृतिक और धार्मिक के साथ साथ सामाजिक स्वरूप का विस्तृत अध्ययन किया गया है और खिचड़ी का क्या रहस्य था उसकी भी चर्चा की है।

**शोध पद्धति**

प्रस्तुत अनुसंधान में भारत के मुख्य नाथ मठों का ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करने के लिए गुणात्मक और वर्णनात्मक शोध प्रक्रिया को अपनाया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उदेश्य नाथ मठों की स्थापना, उसके विकास, धार्मिक परंपराओं, सामाजिक भूमिका और वर्तमान समय में उनका क्या स्थान है, उसका विश्लेषण करना है। शोध के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में नाथ पंथ के मठों का क्षेत्रीय भ्रमण (field visit) किया गया और लेखक के द्वारा मठों की संरचना, वहाँ की धार्मिक गतिविधियाँ और वहाँ के सांस्कृतिक कार्यो का अवलोकन किया गया है। इस अध्ययन के दौरान लेखक के द्वारा संबंधित मठों के महंत, साधु संतों, स्थानीय सेवकों, श्रद्धालु और वहाँ के निवासी आदि के साक्षात्कार करके आवश्यक जानकारी प्राप्त की गयी है और साथ ही वहाँ के छायाचित्र भी संकलित किए गए है।

द्वितीयक स्रोतों में लेखक ने नाथ संप्रदाय और नाथ मठों से संबंधित शोध, पुस्तकें, शोध पत्रों और अन्य प्रामाणिक अकादमिक स्रोतों का अध्ययन किया है और जिन मठों पर लेखक ने जाकर जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है उनकी सूची कुछ इस प्रकार से है- (1) पीर खो मंदिर, जम्मू में स्थित वहाँ पर वर्तमान समय में योगी करन नाथ जी है जो की पीर खो मठ में अपनी लगातार सेवाएँ दे रहे है। (2) स्वानखां में प्रसिद्ध बाबा सिधगोरिया नाथ के नाम मशहूर पूरे भारतवर्ष में इनकी अलग पहचान है। (3) बाबा चम्भे नाथ जी, इनका स्थान जम्मू के पुरमंडल में स्थित है और वहाँ क्षेत्रीय भ्रमण करने से लेखक को बहुत लाभ हुआ और वहाँ पर आज भी सुरक्षित बाबा चम्भे नाथ की गुफ़ाएं बहुत कुछ विवरण देती हैं। गुफाओं का दृश्य देखने योग्य है। (4) बाबा बिरफानाथ जी का स्थान जो की जम्मू के रणबीर सिंह पूरा में है और वहाँ पर जम्मू के मीनिया जाति के लोग अपनी लगातार सेवाएं दे रहे है। (5) उत्तर प्रदेश के गोरख मठ में लेखक के द्वारा क्षेत्रीय भ्रमण किया गया है और 10-15 साक्षात्कार भी किए जिनमें स्थानीय लोग शामिल है और कुछ श्रद्धालु भी शामिल है। यहाँ गुरु गोरखनाथ जी के द्वारा प्रज्वलित धूनी आज भी अखंड रूप से जल रही है।

**जम्मू में संत सिधगोरिया नाथ का मठ**

जम्मू-कश्मीर में संत सिधगोरिया की महिमा का दृश्य अलग ही तरह से देखने को मिलता है। उनकी मान्यता लगभग पूरे जम्मू में है यहाँ पर हर वर्ष जून में लगने वाला मेला और मेले में यहाँ पर पूरे भारत वर्ष से आए हुए लोग उनकी मान्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है। जम्मू कश्मीर में लगभग हर घर में बाबा सिधगोरिया नाथ जी के जयकारे लगये जाते है। अगर हम इनके इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो सबसे पहले यह जम्मू के स्लेड गाँव में एक कुएँ से प्रकट हुए, ऐसा बताया जाता है। वह वहीं पर बैठना चाहते थे और वहाँ पर पहले से ही बाबा अमरनाथ जी बैठे हुए थे फिर उन्होंने वहाँ से गाँव स्वानखां की और प्रस्थान किया और वर्तमान में हमें उनकी समाधि गाँव स्वानखां में ही देखने को मिलती है। यह वही कुवाँ है जहां से बाबा सिधगोरिया नाथ जी प्रकट हुए थे और आज भी यह कुवाँ सुरक्षित है साथ में ही बाबा अमरनाथ की समाधि भी है। बाबा सिधगोरिया नाथ जी का स्थान पहले पवित्र सरोवर के बीचो बीच था और वर्ष 2026 में इनके स्थान को और सरोवर को अलग कर दिया गया है। संत सिधगोरिया के दर्शन का मूल आधार जीव–जंतुओं के प्रति करुणा, पर्यावरण की सुरक्षा, गौ सेवा और सामाजिक समरसता है। आज भी गाँव स्वानखां के लोग अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए पशुओं से प्राप्त प्रथम दूध, दही, घी सिधगोरिया नाथ को अर्पित करते है, जो की गौ सेवा और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक माना जाता है। किंवदंतियों के अनुसार जब बाबा सिधगोरिया गाँव स्वानखा में आए थे तो वहाँ दूध की बहुत कमी थी उनकी कृपा से वहाँ पर जितने भी गाय थी सबके थान से खुद ब खुद दूध निकलना शुरू हो गया और कहा जाता है की आज भी उस गाँव की मिटी को अगर खुरेदे तो जमीन से दूध निकलता है जिसकी मात्रा तो कम ही होती है पर यह उनकी कृपा का प्रमाण है। उन्होंने गाँव स्वानखां में नहीं बल्कि पूरे भारत वर्ष में प्रकृति संरक्षण पर भी बल दिया। लोकमान्यताओं के अनुसार मठ परिसर में स्थित सरोवर में स्नान करने से मानसिक शांति और देह संबंधी

कष्टों से राहत मिलती है और इस प्रकार बाबा सिधगोरिया नाथ का दर्शन सेवा, करुणा, सत्य, प्रकृति संरक्षण एवं लोककल्याण के आदर्शों पर आधारित है।

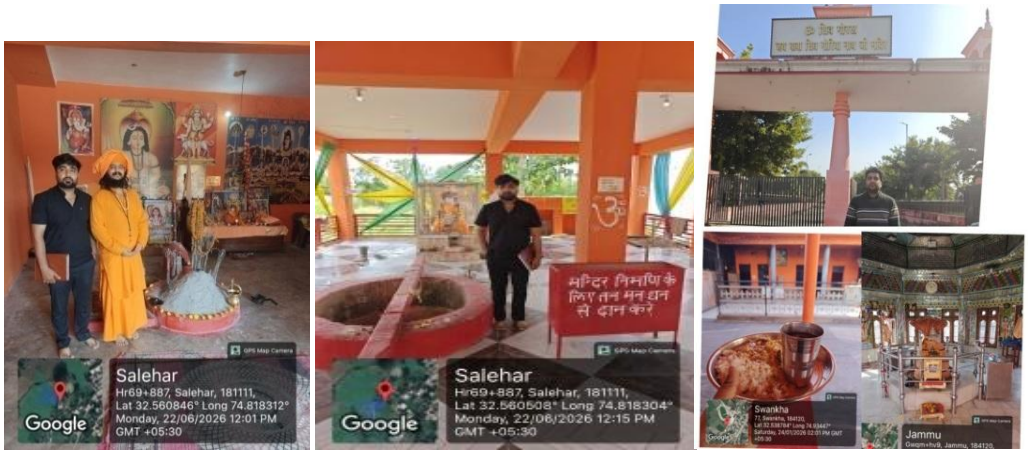


इस छाया चित्र में बाबा सिधगोरिया नाथ जी के मठ के कुछ चित्र है।

**बाबा बिरफानाथ मठ**

बाबा बिरफानाथ जी का देव स्थान भी जम्मू में है। इनका देव स्थान जम्मू से लगभग 25-30 कि.मी की दूरी पर है। इनका जन्म स्थान और देव स्थान दोनों अलग अलग क्षेत्रों में है। जन्म इनका जम्मू के बड़ी–ब्राह्माण के वीरपुर गाँव में हुआ था और इनका नाम वीरू था। पिता जी का नाम लदधा ब्राह्मण था जिन्होंने कुछ पैसों के लिए राजा बिराम देव को बेच दिया था। तब उनके कुएं में पानी नहीं आ रहा था। उनको एक गोरे ब्राह्मण और इकलौता ब्राह्मण की बलि चाहिए थी तब उनको वीरू मिला तो उन्होंने उसकी बलि देने के लिए अपने कुएं के पास ले आए। तब वहाँ गुरु गोरखनाथ जी आए थे, तब उन्होंने उनकी रक्षा की। आज उनका धार्मिक स्थान जम्मू के जससोर में है जो की जम्मू के लोगों का आस्था का केंद्र बना हुआ है। वर्तमान समय में वहाँ की मीनिया जाति के लोग वहाँ की देख रेख कर रहे हैं। बाबा बिरफानाथ की आध्यात्मिक परंपरा में गुरु शिष्य संबंध की साधना को मूल आधार माना जाता है। स्थानीय परंपराओं के अनुसार बाबा बिरफानाथ जी को गुरु गोरखनाथ का सानिध्य प्राप्त हुआ। गुरु गोरखनाथ के मार्गदर्शन में उन्होंने योग, तप, संयम और आध्यात्मिक अभ्यास किया।

### बाबा चम्भे नाथ की गुफाएँ एवं मठ

जम्मू क्षेत्र की परंपरागत नाथ साधना स्थली के रूप में प्रसिद्ध बाबा चम्भे नाथ की गुफाएँ तहसील पुरमंडल के देओन गाँव में स्थित है। ये गुफाएँ अपनी ऐतिहासिक और प्राचीन महत्ता के कारण विशेष पहचान रखती हैं। वहाँ क्षेत्रीय अध्ययन करने पर यह मालूम हुआ कि सभी गुफाओं का आकार अलग–अलग है। गुफाओं के अंदर जाते ही गुफाओं का गहरा इतिहास महसूस होना शुरू हो जाता है। इन गुफाओं का उपयोग साधना एवं ध्यान के लिए किया जाता था। मैदानी अध्ययन के दौरान गाँव के पंच श्री आशुतोष शर्मा जी, जिनकी आयु लगभग 45 वर्ष है, उनसे गहरी बातचीत करने पर यह ज्ञात हुआ था की बाबा चम्भे नाथ जी यहाँ अकेले नहीं आए थे। वह अपने साथियों के साथ इस जगह पर रुके थे और कई वर्ष तपस्या और साधना के बाद वे यहाँ से चले गए। गुफाओं के साथ ही एक मंदिर भी है जो की इंद्रेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। बाबा चम्भे नाथ का दर्शन एकांत साधना, योग और तपस्या पर आधारित माना जाता है। किंवदंतियों के अनुसार बाबा चम्भे नाथ प्राकृतिक गुफाओं को साधना का माध्यम बनाते थे, जहां पर एकाग्रता, आत्मचिंतन के लिए योग अभ्यास करते थे। उनका दर्शन सादगी, आत्मानुशासन और आंतरिक आध्यात्मिक और उन्नति पर बल देता था। नीचे छाया चित्र में बाबा चम्भे नाथ की गुफाएँ है।

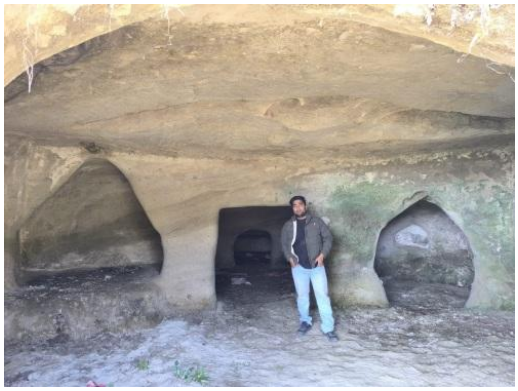

### जम्मू में पीरखों मठ

जम्मू में पीरखों मठ नाथ संप्रदाय का प्रमुख मठ माना जाता है। यह मठ जम्मू शहर के तवी नदी के तट पर स्थित है। इस मठ को जामवंत की गुफा भी कहा जाता है। यह मठ भगवान शिव को समर्पित है। वहाँ की तस्वीरों और मैदानी अध्ययन करने के बाद यह पता चला की पीर संध्या नाथ जी वहाँ के सबसे पुराने पीर थे। पीर यानि की संत और खो यानि की गुफा और संत लोग यहीं पर अपनी तपस्या करने के लिए आते थे तो इसी वजह से इस जगह का नाम पीर खो पड़ गया यानि की पीरों की गुफा। इस स्थान का नाथ परंपरा में विशेष महत्व है। यह जम्मू शहर की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है।

इस छायाचित्र में वहाँ के योगी है साथ में लेखक है और वहीं से लेखक को एक पुस्तक की प्राप्ति भी हुई जिसका नाम "***गोरख महापुराण***" है। इसी गुफा में रामायण काल में जामवंत ने तपस्या की थी। कालांतर में यह स्थान नाथ योगियों की साधना का मुख्य केंद्र बना। जहां पर पीर संध्या नाथ सहित अनेक नाथ सिद्धों ने योग और तप की परंपरा को आगे लेकर गए।

**संत संतोख नाथ मठ**

संत संतोख नाथ का मठ जम्मू के समीप के क्षेत्र बड़ी ब्राह्मण के समैलपुर गाँव में स्थित है। यह मठ नाथ संप्रदाय का एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। लोक परंपरा के अनुसार संत संतोख नाथ पाकिस्तान से आए थे और गाँव समैलपर में रहे। मठ के साथ ही उनका एक पवित्र सरोवर भी है। इनका दूसरा स्थान व्यासपुर परलाह में स्थित है जो की जम्मू के दबलहड़ गाँव में स्थित है। समैलपर गाँव में जब बाबा संतोख नाथ जी ने समाधि ली तब उनके भक्तों, स्थानीय लोगों और सेवादारों के द्वारा ही इस मठ का निर्माण किया गया था। बाबा संतोख नाथ ने शरीर को ही मंदिर माना, उन्होंने हठयोग पर ज्यादा बल दिया और लोगों में लोक कल्याण और समानता का भाव फैलाया।

**गोरखनाथ मठ, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश**

गोरखपुर मठ, गोरखपुर नाथ संप्रदाय का सबसे अहम और भारत के नाथ संप्रदाय में सबसे बड़े मठों में से एक है। नाथ संप्रदाय का यह सबसे महत्वपूर्ण पीठ है और सिर्फ भारत देश ही नहीं नेपाल के साथ-साथ और भी क्षेत्रों के नाथ अनुगामियों के लिए आस्था का मुख्य केंद्र है। धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। लेखक के द्वारा यहाँ के अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि गोरखनाथ की परंपरा के साथ जुड़े हुए यहाँ पर अनेक साधु-संतों की प्रतिमाएँ भी स्थापित है, जो नाथ संप्रदाय की गुरू-शिष्य परंपरा, योग साधना और आध्यात्मिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक गोरखनाथ मठ नाथ परंपरा के इतिहास के संरक्षण और प्रचार प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभाता रहा है। यह मठ केवल योग और साधना का केंद्र ही नहीं बल्कि शिक्षा, समाज सेवा, गौ सेवा और सांस्कृतिक संरक्षण का भी प्रमुख संस्थान रहा है। वर्तमान समय में भी यह मठ अपनी ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए नाथ संप्रदाय की परंपराओं को आगे बढ़ा रहा है।

यह छायाचित्र गोरखपुर में गोरखमठ का है जो की लेखक के द्वारा मैदानी अध्ययन के दौरान लिए गए थे।

**कदरी मठ, कर्नाटक**

कदरी मठ भारत में कर्नाटक के मेंगलुरु में स्थित एक नाथ संप्रदाय का प्रमुख मठ है। यह भगवान शिव, गुरु मत्स्येंन्द्रनाथ और गुरु गोरखनाथ की परंपरा से जुड़ा हुआ माना जाता है। यहाँ पर साधुसंत-, योग ध्यान और आध्यात्मिक साधना करते हैं। इस मठ का इतिहास 10 वीं - 11 वीं शताब्दी से जुड़ा हुआ माना जाता है। यह मठ शैव और नाथ परंपरा का

मुख्य केंद्र है। यहाँ प्राप्त प्राचीन शिलालेख और प्रतिमाएँ इसके ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करती है। कदरी मंजूनाथ भगवान शिव का ही रूप थे। कदरी मठ का संबंध बौद्ध परंपरा से भी माना जाता है। कदरी क्षेत्र मध्यकाल में महायान एवं वज्रयान का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ गुरु गोरखनाथ कब आए इसके बारे में कोई भी निश्चित ऐतिहासिक वर्ष या कोई तिथि उपलब्ध नहीं है। कदरी मठ की विशेष पहचान शैव और बौद्ध परंपराओं के ऐतिहासिक समन्वय में निहित है जिसने दक्षिण भारत में नाथ दर्शन के विकास को नई दिशा प्रदान की। यहाँ हठयोग, गुरु-शिष्य परंपरा और शिव शक्ति के अद्वैत भाव को साधना का मूल आधार माना जाता है। कदरी मठ मूल रूप से 10वीं शताब्दी में "कदरारिका विहार" नामक एक बौद्ध मठ (वज्रयान संप्रदाय) था, जो बाद में नाथ पंथ के प्रभाव में आया।

**अस्थल बोहर, हरियाणा**

अस्थल बोहर मठ हरियाणा के प्रमुख नाथ मठों में से एक है। इस मठ की परंपरा मध्यकालीन नाथ संप्रदाय से जुड़ी हुई मानी जाती है। इस मठ की परंपरा पूरन भगत और गुरु गोरखनाथ से जुड़ी हुई मानी जाती है। यह नाथ संप्रदाय का महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है। यहाँ पर प्राचीन मठ, मंदिर और समाधियाँ स्थित है। यह स्थान हरियाणा की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक माना जाता है। इस मठ की स्थापना पूरन भगत के द्वारा की गई थी। इनको चौरंगीनाथ के नाम से भी जाना जाता है। जम्मू कश्मीर में इनको पूरन भगत ही कहा जाता है। सन 2012 में इनके सातवें शिष्य महंत चाँदनाथ ने इनके नाम पर बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की स्थापना भी की। यह मठ केवल आध्यात्मिक साधना का केंद्र ही नहीं, बल्कि शिक्षा, समाज सेवा, आयुर्वेद और लोक कल्याण का भी मुख्य केंद्र है।

**जालंधर नाथ मठ**

राजस्थान के टोंक जिले में स्थित निवाई नगर अरावली की शांत पहाडियों के बीच बसा एक प्राचीन क्षेत्र है। जहां जालंधर नाथ जी का मठ है। इस मठ की स्थापना स्वयं जालंधर नाथ ने की थी और स्थापना का मुख्य कारण तपस्या करना ही था। नाथ संप्रदाय के महान सिद्ध योगी जालंधर नाथ का यह स्थल सदियों से साधना, योग और आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र माना गया है। जालंधर नाथ नवनाथों में से एक प्रमुख नाथ थे। वह योग तंत्र और ध्यान के ज्ञाता थे। नाथ संप्रदाय में इस पीठ की बहुत मान्यता है। इस मठ में गणपति और हनुमान भी विराजमान हैं जो की अत्यंत दर्शनीय है। मठ के अंदर एक गुफा भी देखने को मिलती है। इस गुफा में जालंधर नाथ ने घोर तपस्या की थी और वहीं पर ही हमें जालंधर नाथ की समाधि भी देखने को मिलती है। जालंधर नाथ का दर्शन नाथ संप्रदाय की योग परंपरा का अहम अंग है। उन्होंने हठयोग, गुरु-शिष्य परंपरा, आध्यात्मिक और आंतरिक साधना को जीवन का आधार माना। उनका दर्शन सामाजिक, आध्यात्मिक अनुशासन तथा लोककल्याण की भावना से प्रेरित माना जाता है। उनका दर्शन हठयोग, तंत्र और कापालिक मत का एक अनूठा मिश्रण है। उनके दर्शन में शरीर साधना को मुख्य माध्यम माना जाता है। वे हठयोग के माध्यम से ही कुंडलिनी जागरण और आंतरिक ऊर्जा के नियंत्रण पर जोर देते थे। उन्होंने लिंग, जाति, वर्ण का कोई भेदभाव नहीं माना। उनकी विचारधारा सभी के लिए ज्ञान और मोक्ष के द्वार खोलती थी।

**निष्कर्ष**

प्रस्तुत अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि भारत के प्रमुख नाथ मठ न केवल धार्मिक आस्था एवं पूजा अर्चना के केंद्र हैं, बल्कि वे भारतीय सभ्यता संस्कृति, योग परंपरा, गुरु-शिष्य परंपरा और सामाजिक समरसता के संरक्षण और संवर्धन के महत्वपूर्ण संस्थान भी रहे हैं। मध्यकाल से लेकर वर्तमान समय तक नाथ मठों ने समाज में आध्यात्मिक चेतना का विकास, नैतिक मूल्यों की स्थापना, लोककल्याण की भावना और संस्कृति विरासत के संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इस शोध में भारत के अलग अलग राज्यों– जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और कर्नाटक में स्थित प्रमुख नाथ मठों का ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है। साथ ही लेखक के द्वारा किए गए क्षेत्रीय भ्रमण में महंत, साधु, संतों, सेवकों और स्थानीय लोगों के साक्षात्कार से यह तथ्य सामने आया की हर एक मठ की अपनी-अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थानीय परंपराएँ एवं धार्मिक मान्यताएँ है। किन्तु सभी का मूल

उदेश्य योग साधना, लोककल्याण तथा मानवता की सेवा ही रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है की नाथ मठ भारतीय समाज में केवल आध्यात्मिक केंद्र ही नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण एवं सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम भी रहे हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि गोरखनाथ मठ, अस्थल बोहर, कदरी मठ, बाबा सिधगोरिया मठ, बाबा बिरफानाथ मठ, बाबा चम्भे नाथ की गुफाएँ, पीर खो मठ तथा संत संतोख नाथ मठ जैसे प्रमुख केंद्र आज भी अपनी-अपनी प्राचीन परंपराओं को जीवित रखे हुए शिक्षा, योग, गौ सेवा, धार्मिक अनुष्ठानों एवं सांस्कृतिक आयोजनों तथा जनसेवा के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन मठों का योगदान केवल किसी एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि इनका संबंध भारत के हर कोने से है और साथ ही यह भारतीय सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक विरासत को भी संभाले हुए हैं।

इस शोध का महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है की इसमें पुस्तकों एवं पत्रों के साथ साथ प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अध्ययन को आधार बनाया गया है, जिससे प्रस्तुत निष्कर्ष अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय बनते है। यह अध्ययन भविष्य में नाथ संप्रदाय, उसके मठों स्थानीय परंपराओं, लोक विश्वास तथा सांस्कृतिक इतिहास पर होने वाले अनुसंधानों के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि नाथ मठ भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इनका संरक्षण केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को सुरक्षित रखने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान वैश्वीकरण और तीव्र सामाजिक परिवर्तन के युग में नाथ मठ भारतीय ज्ञान परंपरा, योग दर्शन, नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक पहचान को जीवंत रखने वाले सशक्त केंद्र हैं। इसीलिए इनके इतिहास, परंपराओं और सांस्कृतिक योगदान का संरक्षण, प्रलेखन तथा व्यापक अकादमिक अध्ययन समय की महत्वपूर्ण अपेक्षा है।

## संदर्भ


Briggs, George Weston (1938). *Gorakhnath and the Kanphata Yogis*. New Delhi: Motilal Banarsi Dass Publishing House.

गोस्वामी, ओम (2011). *बाबा बिरफानाथ कथा तथा लोकगाथा*. जम्मू: बजाज बुक स्टोर.

गोस्वामी, ओम (2011). *जाग गोरिया गोरख आया*, जम्मू: बजाज बुक स्टोर.

राघव, रांगेय (1963). *गोरखनाथ और उनका युग*, दिल्ली: अनन्य प्रकाशन.

विलासनाथ, महंत योगी (2015). *श्री नाथ संप्रदाय के तीर्थ स्थल एवं प्राचीन भतृहरि गुफा एवं महात्म्य*. हरिद्वार: अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

सिंह, पद्मजा (2024). *नाथपंथ का इतिहास*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.